शोध–प्रारूप

नागपुरी कवि राम उचित सिंह दृष्टि एवं सृष्टि : एक अध्ययन

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध – प्रारूप
संकाय – जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा
वर्ष : 2024

शोध निर्देशक :

डॉ० रामजय नाईक
सहायक प्राध्यापक
नागपुरी विभाग
जगन्नाथ नगर महाविद्यालय
धुर्वा, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी :

सूरज कुमार
नेट/जे०आर०एफ०
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय,राँची

स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

भूमिका

भारतीय मानचित्र के उत्तर पूर्व में स्थित झारखण्ड सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विशेषता का केंद्र रहा है, जिसके कारण देश में इसकी एक अलग पहचान है दूसरी ओर विविध भाषाओं के बीच नागपुरी भाषा साहित्य का भंडार भी बहुत विशाल है। नागपुरी भाषा साहित्य एवं संस्कृति की विशेषता झारखण्ड की पहचान है, इन्हें पोषित करने एवं उनकी मौलिकता को अक्षुण्ण बनाए रखने में कई कवियों, कलाकारों एवं साहित्यकारों का योगदान है। राम उचित सिंह राकेश इन्हीं चिन्तक में से एक मुख्य कवि, शिक्षक, प्रशिक्षक की भूमिका में इनके जड़ों को सींचने में अथक श्रम साध्य प्रयास को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध–कार्य नागपुरी **कवि राम उचित सिंह दृष्टि एवं सृष्टि : एक अध्ययन** से समाज एवं साहित्य को बल मिलेगी। वर्तमान नागपुरी साहित्य एवं संस्कृति की विरासत को समझने के लिए इसके अतीत का संक्षिप्त अवलोकन करना आवश्यक है तथा नागपुरी साहित्यकार के पद सोपान में राम उचित सिंह के योगदान का निर्धारण विद्वानों द्वारा किया जा सकता है।

झारखण्ड में असुर प्राचीन जनजाति है, जो कि प्राचीन काल से यहां निवास करती आ रही है, परंतु यहां विभिन्न काल खण्डों में अलग–अलग जनजातीयों एवं गैर जनजातीयों ने अपने–अपने समूह में प्रवेश करते गए, जिसके कारण यहां भाषायी समस्या उत्पन्न हुई। एक दूसरे की भाषा, विचारों में आपसी समझ विकसित न हो पाने के कारण प्राचीन काल में छोटे–मोटे झड़प और खूनी संघर्ष हुए और वैमनष्यता के भाव की गहरी खाई उत्पन्न हो गई थी । इसे पाटने के लिए और आपसी दूरी को मिटाने हेतु, नागपुरी भाषा झारखण्ड की अन्य भाषाओं के बीच से प्रतिनिधित्व भाषा के रूप में उभर कर सामने आई और समन्वय स्थापित कर, सदान आदिवासियों की सामूहिक साझा संस्कृति विकसित किया। सदान और आदिवासी दोनों ने एक दूसरे के भाषा संस्कृति को प्रभावित किया और लोगों ने उसे सहजता से ग्रहण किया। नागपुरी भाषा आदिवासियों के लिए संपर्क भाषा बन गयी ।

परिवर्तनशीलता साहित्य की प्रवृति है। नागपुरी साहित्य भी सदा से परिवर्तनशील रही है, और इसमें युग के अनुरूप समन्वय की भावना होती है। इसका दृष्टिकोण इतना उदार रहा है, कि इसने विजातीय तत्वों को भी आत्मसात करने में कभी नहीं हिचकीचायी है, इसी कारण जाति, धर्म, संस्कृति से विविधता के बावजूद झारखण्ड की आत्मा एक–सी दिखलाई देती है। मुझ ऐसा प्रतीत होता है, कि नागपुरी साहित्य संस्कृति की यह सबसे बड़ी विशेषताओं में

से एक है। इन्हीं विशेषताओं के कारण नागवंशी काल में झारखण्ड में नागपुरी भाषा को राजकीय भाषा का गौरव प्राप्त था। संप्रति यह राज्य की द्वितीय राजभाषा है।

किसी भी साहित्य का विकास उसकी लोक साहित्य से ही विकसित होती है, उसी प्रकार नागपुरी भाषा साहित्य का विकास क्रम भी लोक साहित्य से हुआ है। जिसमें नागपुरी भाषा साहित्य और संस्कृति की भव्यता को मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को हस्तांतरित होता रहा है।

नागपुरी साहित्य को लिपिबद्ध करने का साक्ष्य रघुनाथ नृपति के काल को शिष्ट साहित्य का प्रारंभिक आधार माना गया है, किंतु भाव की गंभीरता और शैली शिल्प की पुष्टता को देखते हुए इसे नागपुरी साहित्य का प्रथम कवि होने में संदेह होता है, बल्कि इसकी जड़ गहराई में है। नागपुरी साहित्य का आदिकाल के कवियों में बरजू राम और हनुमान सिंह प्रमुख कवि हुए ।

नागपुरी साहित्य मध्यकाल में अपनी क्षेत्र विस्तार कर पद्य के अलावे गद्य साहित्य विधा की रचनाएँ हुए। पद्य साहित्य रचना में सगुन एवं निर्गुण दोनों भक्ति धाराएँ प्रवाहित हुई। इसके प्रमुख कवियों में घासीराम और महंत घांसी प्रमुख थे। धनीराम बक्शी को परवर्ती मध्यकाल और प्रारंभिक आधुनिक काल के संधि स्थल में खड़े होने के कारण इन्हें नागपुरी साहित्य का भारतेंदु कहा गया।

आधुनिक नागपुरी काव्य के प्रणेता प्रफुल्ल कुमार राय ने पारंपरिक छंद के बेड़ियों से मुक्त होते हुए, नागपुरी काव्य विधा में विस्तार हेतु मुक्तक काव्य में रचनाकर एक नवीन विद्या का शुभारंभ किया । इस युग में काव्य की समृद्धि हेतु प्रमुख कवियों के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया गया जिनमें प्रमुख कवि हैं – डॉ० बी०पी० केसरी, शारदा प्रसाद शर्मा, सहनी उपेंद्र पाल नाहन, डॉ० गिरिधारी राम गौंझू गिरिराज, मेघनाथ ओहदार, लाल रंणविजय नाथ साहदेव, क्षितिज कुमार राय, मधु मंसूरी हंसमुख, प्रमोद कुमार राय, डॉ० कृष्ण प्रसाद साहु, कलाधर, डॉ० कुमारी बासंती, डॉ० खालीक अहमद, डॉ० सविता केशरी, डॉ० उमेश नन्द तिवारी, डॉ० शकुंतला मिश्रा इत्यादि ।

आधुनिक नागपुरी कवियों की एक लंबी श्रृंखला है, इन्हीं श्रृंखलाओं में नागपुरी कवि एवं कलाकार के रूप में राम उचित सिंह 'राकेश' का प्रमुख स्थान है, जिन्होंने नागपुरी गीत–कविताओं की न केवल रचनाएं की बल्कि अपनी मौलिक और वास्तविक स्वरूप में उतरने के लिए रंगमंच का हिस्सा बन गए तथा अपने प्रांतों की सीमा पार जाकर जैसे छत्तीसगढ़, उड़ीसा, बिहार, बंगाल, इत्यादि

में नागपुरी भाषा साहित्य कला संस्कृति के द्वारा प्रसिद्धियाँ प्राप्त किये और इस कार्य हेतु कई पुरस्करों से सम्मानित किया गया।

इन्होंने नागपुरी भाषा एवं साहित्य के प्रचार–प्रसार हेतु प्रिंट मीडिया के माध्यम से पत्र पत्रिका में गीत कविताएं समय–समय पर छपते रहे तथा स्वयं के द्वारा अब तक पांच पुस्तकें प्रकाशित किए गए हैं –

1. नागपुरी गीत माला (1981)
2. धवई फूल (1982)
3. मंजर (1984)
4. नागपुरी लय राग मंजरी (2014)
5. नागपुरी संगीत सरिता (2021)

इन पुस्तकों में नागपुरी गीतों की सूक्ष्मता का अध्ययन हेतु नागपुरी लय राग मंजरी को आधार ग्रंथ की श्रेणी में रखा जा सकता है।

इन्होंने रेडियो और दूरदर्शन के माध्यम से भी जन–जन तक नागपुरी भाषा को पहुंचाएं जिसमें गीत, कविता एवं नागपुरी भेंट वार्ता आदि कार्यक्रम शामिल है।

वर्तमान में डिजिटल मीडिया के माध्यम से भी युट्यूब, फेसबुक जैसे सोशल मीडिया जैसें प्लेटफार्म का उपयोग, अन्य सहयोगियों के द्वारा नागपुरी भाषा कार्यक्रम का प्रचार–प्रसार में सक्रिय रहे हैं। नागपुरी भाषा के प्रति इनका पड़ाव यहीं तक नहीं थमा 69 वर्ष की अवस्था में भी बतौर प्रशिक्षक के रूप में गांव में ही रास मंडली नागपुरी साहित्य कला मंच नामक संस्था स्थापित कर निशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है।

नागपुरी भाषा–संस्कृति की मौलिकता को बचाए रखने की गंभीर चिंतन और छटपटाहट कवि के प्रस्तुत राग जनानी झूमर गीत में देख सकते हैं–

आपन पहचान कहीं, कइसे बताब,

आपन बोली आपन भाखा छोइड़ कहां जाब।

झारखण्डी हकी सेकर, का हय पहचान,

नागपुरी बोलेक चालेक, नखे कोनो ज्ञान।

निज भाखा बोलेक लेगीन, रउरे लजाब,

आपन बोली आपन भाखा छोइड़ कहां जाब, निज भाखा ....

कवि राम उचित सिंह राकेश की रचनाएं विविध विषयों पर मिलते हैं। इनके लेखनी के तिक्ष्ण धार चलते हैं, तो समाज एवं संस्कृति के सभी पहलुओं के भाव को समेट लेते हैं। वैसे तो इनकी रचनाएं बहुत है, किंतु उनके मनोभाव के केंद्रीय बिंदु राष्ट्रभक्ति से प्रेरित वीर रस के गीत की रचना कर के और उसे गाकर उन्हें आत्म तृप्ति प्राप्त होती है। भक्ति धारा के दोनों रूपों, सगुन भक्ति एवं निर्गुण भक्ति धारा के गीत मिलते हैं। इनके द्वारा रचित श्रृंगार रस के गीतों की विशेषता उपेन्द्रपाल नहन के अनुसार यह है कि इनके द्वारा रचित गीतों में फुहड़ता दिखलाई नहीं देता बल्कि तुलसी के राम की तरह मर्यादित एवं संकल्पित गीतों में मर्यादा की सीमा को ध्यान में रखा जाता है। प्रकृति–चित्रण एवं समसामयिक विषयों को आधार बनाकर भी गीत रचना करने में कुशल हैं।

अब तक इन्होंने लगभग कुल 2000 गीत एवं कविताओं की रचना कर चुके हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी कवि राम उचित सिंह राकेश बतौर कवि एवं कलाकार शिक्षक प्रशिक्षक नागपुरी भाषा सेवी एवं संरक्षक के रूप में अमूल्य योगदान है।

अतः उपरोक्त उपलब्धि एवं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए मैंने राम उचित सिंह दृष्टि एवं सृष्टि : एक अध्ययन नामक शोध–प्रस्ताव के माध्यम से उनके समस्त उपलब्धि, जीवन, घटना, उनके व्यक्तित्व, उनके द्वारा नागपुरी साहित्य के लिए किए गए कार्यों का लेखा–जोखा का विवरण व विश्लेषण शोध के माध्यम से प्रस्तुत करना है। इस शोध से समाज को निश्चित ही लाभ होगा और नागपुरी भाषा साहित्य के गौरव की रक्षा होगी। समाज आगे बढ़ेंगे जिससे मेरे द्वारा किए गए शोध–कार्य सार्थक सिद्ध हो, ऐसा मेरा प्रयास रहेगा।

परिकल्पना –

'राम उचित सिंह दृष्टि एवं सृष्टिः एक अध्ययन' शोध विषय के माध्यम से नागपुरी भाषा कला साहित्य जगत में कवि राम उचित सिंह राकेश का वही स्थान है, जैसे–आसमान में हजारों तारों के बीच शीतलता प्रदान करने वाले चंद्रमा स्वयं उदित व प्रकाशित हो रहा हो, जिसकी कांति और लावण्यता की आभा से पूरी समाज को अभिभूत व गौरवान्वित कर रही हो। नागपुरी भाषा के लिए इनके द्वारा चहुमुखी किये जा रहे कार्यों और उपलब्धियों से समाज में अपनी भाषा, कला, साहित्य व संस्कृति की मौलिकता को अक्षुण्ण बनाए रखने में

जागरुकता आएगी, लोग शिक्षा से जुड़ेंगे जिससे नागपुरी भाषा साहित्य की लोकप्रियता बढ़ेगी, समाज सशक्त होगा तो देश को आगे बढ़ाने में बल मिलेगा।

प्रेरणा :—

नागपुरी साहित्यकार राम उचित सिंह राकेश दृष्टि एवं सृष्टि एक अध्ययन मेरे शोध का विषय बनाने के पूर्व से ही मैं उनके व्यक्तित्व से प्रभावित था, पर एक दिन शोधार्थी के रूप में मुझे इनके समस्त व्यक्तित्व उपलब्धियां पर कार्य करने सुअवसर प्राप्त होगा इसका निर्धारण समय ने स्वयं मुझ पर किया है। मैं इस कार्य को पूरी निष्ठा और लगन से ईमानदारी पूर्वक सफल कर सकूंगा, ऐसा मेरा प्रयास रहेगा।

शोध विषय की मौलिकता :—

प्रस्तुत शोध—कार्य राम उचित सिंह के जीवन और उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों व उपलब्धियां तथा नागपुरी भाषा साहित्य संस्कृति को इससे होने वाले सकारात्मक प्रभाव पर केंद्रित होगी। साहित्यकार समाज उपयोगी कार्य करते हैं पर साहित्यकार के इस कार्यों से समाज को परिचित कराना हमारा दायित्व होना चाहिए। कवि के बहुत सारी अप्रकाशित रचनाएं बाधक बनी हुई है, जिससे आशा अनुरूप उनके गुणों का बखान साहित्य में नहीं हो पाया है। प्रस्तुत शोध—कार्य **राम उचित सिंह दृष्टि एवं सृष्टिः एक अध्ययन** से इनके भव धारा प्रकट होंगे तथा नागपुरी भाषा साहित्य का विकास होगा ।

शोध विधि :—

प्रस्तावित शोध—प्रबंध के अध्ययन के लिए निम्नलिखित शोध विषयों का अनुसरण किया जा सकता है।

1. अवलोकन विधि
2. वर्णनात्मक विधि
3. साक्षात्कार विधि
4. सर्वेक्षण विधि
5. आलोचनात्मक विधि
6. विश्लेषणात्मक विधि

शोध–कार्य का क्षेत्र –

प्रस्तावित शोध–कार्य नागपुरी के मूर्धन्य कवि एवं कलाकार राम उचित सिंह : दृष्टि एवं सृष्टि एक अध्ययन पर केंद्रित है। अतः इस शोध–कार्य का क्षेत्र यानी विषय सीमा उनके जीवन, कार्य साहित्य सामाजिक एवं कलाकारी गुणों तक सीमित होगी।

शोध उपकरण –

प्रस्तावित शोध विषय नागपुरी साहित्यकार राम उचित सिंह राकेश दृष्टि एवं सृष्टि एक अध्ययन के लिए निम्नलिखित सामग्री शोध–कार्य के लिए उपयोग किये जा सकते हैं शोध से संबंधित पुस्तकें तथा प्रकाशित रचनाओं, संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाओं जैसे गोतिया, जोहार, आदिवासी नागपुरी, जय झारखंड, आदिवासी, सकाम, झारखण्ड समाचार, शंखनाद, पझरा, कला संगम, जोहर सहिया, अखड़ा, आदि। रिकॉर्डर, कैमरा, मोबाइल, लैपटॉप, इंटरनेट, प्रिंटर, पेपर, कलम, पेंसिल, इत्यादि।

उद्देश्य :

1. नागपुरी भाषा, कला, साहित्य एवं संस्कृति की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर होगा।
2. नागपुरी साहित्य समृद्ध होगा।
3. नागपुरी साहित्य के कला पक्ष एवं भाव पक्ष उजागर होगा।
4. कवि के पुरे व्यक्तित्व और उपलब्धियों का विश्लेषण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना जिससे कवि को नागपुरी साहित्य में उचित स्थान प्राप्त हो।
5. कवि के बिखरे हुए अप्रकाशित रचनाओं को संकलित करना।

महत्त्व :–

किसी साहित्य का महत्व तभी होता है जब उसे साहित्य में 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की भावना उसमें निहित होता है। नागपुरी कवि राम उचित सिंह ने अपना बहुमूल्य समय नागपुरी भाषा साहित्य और कला संस्कृति शिक्षा में कार्य किए हैं। प्रस्तुत शोध–कार्य करने से नागपुरी साहित्य जगत के साथ–साथ समाज के लिए एक प्रेरक विषय सामग्रीय प्राप्त होगा।

अधिक साहित्यकारों के सानिध्य प्राप्त होगा, जिससे नए–नए विचार खुलकर सामने आएंगे तो साहित्यिक समस्याओं का बेहतर समझा बनेगा। बच्चों

में शिक्षा रुचिकर एवं सरल होगा। नागपुरी भाषा साहित्य में स्थानीय भाव को धारण करने से विषय में अपनापन की भावना बढ़ेगी जिससे क्षेत्रीय समस्या की समाधान होगी। नागपुरी भाषा की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर बनेगी।

शोध–विषय का समाज पर प्रभाव :–

साहित्य लेखन भाषा के प्रति समर्पण और जन भावना के स्वरूप को लेकर आगे बढ़ती है इसका तर्कसंगत प्रस्तुतीकरण हो सकेगा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों का मंच गठित होगा। नई पीढ़ी में भाषा संस्कृति के प्रति उत्साह जागेगा साहित्यकार कलाकारों के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण बनेगी ।

शोध–कार्य की रूपरेखा निम्नवत है –

अध्यायीकरण

शोध विषय का औचित्य

शोध की विषय सीमा

शोध–विधि

संबंधित विषय से पूर्व में शोध–कार्य का विवरण

प्रथम अध्याय : राम उचित सिंह की जीवन रेखाएँ

1.1 पारिवारिक स्थिति
1.2 जन्म एवं परिवार
1.3 बाल्यावस्था
1.4 किशोरावस्था
1.5 युवावस्था
1.6 विवाह
1.7 संतान
1.8 शिक्षा
1.9 सेवा

द्वितीय अध्याय : राम उचित सिंह के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

बाह्य विशेषताएँ

2.1 रंग रूप
2.2 आकार
2.3 पहनावा

आंतरिक विशेषताएँ

2.1 आत्म स्वाभिमानी
2.2 दृढ़ निश्चयी
2.3 विनम्र
2.4 संग्रह वृति
2.5 न्यायप्रिय, कर्तव्यनिष्ठ

तृतीय अध्याय : राम उचित सिंह के समकालीन परिस्थितियाँ एवं रचनाकार

3.1 सामाजिक परिस्थितियाँ
3.2 आर्थिक परिस्थितियाँ
3.3 धार्मिक परिस्थितियाँ,
3.4 सांस्कृतिक परिस्थितियाँ
3.5 राजनीतिक परिस्थितियाँ
3.6 समकालीन रचनाकार

चतुर्थ अध्याय : राम उचित सिंह का काव्य संसार।

4.1 गीत
4.2 कविता
4.3 खण्ड काव्य

पंचम अध्याय : राम उचित सिंह के रचना में भाव एवं शिल्प सौन्दर्य।

5.1 भाव सौन्दर्य
  (क) भाव, वुद्धि, रस एवं कल्पना
  (ख) विम्ब विधान
  (ग) प्रतीक योजना

5.2 शिल्प सौन्दर्य
  (क) छंद
  (ख) अलंकार
  (ग) भाषा
  (घ) शिल्प व शैली

षष्ठ अध्याय : कलाकार के रूप में राम उचित सिंह।

7.1 रेडियो, दूरदर्शन में भेटवार्ता तथा गीतों का प्रसारण

7.2 रंगमंच पर गीतों की प्रस्तुति

7.3 संगीत प्रशिक्षक

7.4 वादक एवं वादन प्रशिक्षक

उपसंहार :–

नोट – शोध कार्य के दौरान आवश्यकता अनुसार आंशिक परिवर्तन किए जा सकते है।

परिशिष्ट –

1. आधार ग्रंथों की सूची
2. सहायक ग्रंथों की सूची
3. पत्र पत्रिकाओं की सूची
4. साक्षात्कार की सूची
5. चित्रावली

<u>शोध निर्देशक</u> :

डॉ0 रामजय नाईक
सहायक प्राध्यापक
नागपुरी विभाग
जगन्नाथ नगर महाविद्यालय
धुर्वा, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

<u>शोधार्थी</u> :

सूरज कुमार
नेट / जे0आर0एफ0
नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथों की सूची :

क्र.सं.	रचनाकार	पुस्तक	प्रकाशक	वर्ष
1.	अली, डॉ0 नाफर	कविरत्न नईमुद्दीन मिरदाहा : जीवन एवं साहित्य	शोध प्रबंध अप्रकाशित	
2.	अंसारी डॉ. ए. अय्याज	मधुमंसूरी, हंसमुख : जीवन और साहित्य	शोध प्रबंध अप्रकाशित	2016
3.	केशरी, डॉ. सविता	नागपुरी कवि कंचन जीवन साहित्य	नागपुरी संस्थान, राँची	2015
4.	कुमारी, डॉ. समरीता	कविरत्न शारदा प्रसाद शर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व	के.के. पब्लिकेशन, इलाहाबाद	2013
5.	गिरिराज, डॉ. गिरिधारी राम गौंझू	पीटर शांति नवरंगी व्यक्तित्व एवं कृतित्व	पझरा प्रकाशन नागपुरी प्रचारिणी सभा, रांची	1990
6.	तिवारी, डॉ. उमेश नन्द	आधुनिक नागपुरी, साहित्य संदर्भ प्रफुल्ल कुमार राय एक मूल्यांकन	झारखण्ड झरोखा, रांची	2005
7.	दुबे, डॉ. विश्नाथ	धनीराम बक्शी व्यक्तित्व एवं कृतित्व	शोध प्रबंध अप्रकाशित	1981
8.	मिश्रा, डॉ. अनुपमा	सहनी उपेन्द्र पाल नहन	शोध प्रबंध अप्रकाशित।	
9.	लकड़ा, डॉ0 मालती वगीशा।	लाल रणविजय नाथ	शोध प्रंबंध अप्रकाशित	2019

10.	शर्मा, डॉ. अच्युतानंद	नागपुरी के प्राचीन कवि बरजुरामः व्यक्तित्व एवं कृतित्व	शोध प्रबंध अप्रकाशित	2011
11.	षाड़ंगी, डॉ. अशोक	आचार्य, मृत्युजय नाथ शर्मा : व्यक्तित्व एवं कतितव	शोध प्रबंध अप्रकाशित	2011
12.	साहु, डॉ0 सुखदेव	डॉ. भुनेश्वर अनजु' व्यक्तित्व एवं कृतित्व	झारखण्ड झरोखा	2011
13.	साहु, डॉ0 मनोहर	डॉ. बी.पी. केशरी दृष्टि एवं सृष्टि	झारखण्ड झरोखा	2021

संदर्भ ग्रंथ सूची :

क्र.सं.	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक	वर्ष
1.	अनुज, डॉ. भुनवेश्वर	नागपुरी लोक साहित्य	झारखण्ड झरोखा	1992
2.	केशरी, डॉ. विशेश्वर प्रसाद	नागपुरी भाषा एवं साहित्य	कमल प्रकाशन	1971
3.	केशरी, डॉ. विशेश्वर प्रसाद	नागपुरी गीतों में श्रृंगार रस	झारखण्ड झरोखा	1994
4.	केशरी, डॉ. विशेश्वर प्रसाद	साहित्य के तत्व और आयाम	झारखण्ड झरोखा	1971
5.	केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद	नागपुरी भाषा उद्म और विकास	झारखण्ड झरोखा, राँची	2006
6.	गोस्वामी, डॉ. श्रवन कुमार	नागपुरी भाषा	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद	1998
7.	गोस्वामी, डॉ. श्रवन कुमार	नागपुरी शिष्ट साहित्य	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद	1998
8	गिरिराज, डॉ. गिरिधारी राम गौंझू	झारखण्ड का लोकसंगीत	झारखण्ड झरोखा	
9.	दास डॉ० श्यामसुन्दर	साहित्यलोचन	लोक भारती	2017

10.	प्रसाद, डॉ. राम	स्वतंत्रोतर नागपुरी साहित्य	झारखण्ड झरोखा	1992
11.	राकेश, राम उचित सिंह	नागपुरी लय राग मंजरी	स्वप्रकाशित	2014
12.	राकेश, राम उचित सिंह	नागपुरी संगीत सरिता	स्वप्रकाशित	2021
13.	राय क्षितिज कुमार	नागपुरी ताल मंजरी	नागपुरी कला संगम	1985
14	राय, क्षितिज कुमार	मनमेंजूर	छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ, राँची	1971
15.	राय, क्षितिज कुमार	मनमेंजूर	छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ, राँची	1971
16.	साहु, डॉ. त्रिवेणीनाथ	नागपुरी काव्य में प्रकृति चित्रण	किशोर विधा निकेतन	2008

पत्र–पत्रिकओं की सूची :

1. आदिवासी
2. गोतिया
3. आदिवासी महासभा विशेषांक
4. शंखनाद
5. डहर
6. जोहार सहिया
7. नागपुरी पझरा
8. संगम पत्रिका
9. हिन्दूस्तान
10. प्रभात खबर